

लिली (Lily) की खेती से किसानों की आय में वृद्धि पूर्णमा सिंह सिकरवार

परिचय:

लिली के फूलों की खेती किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय साबित हो रही है। इसकी खेती से किसानों को बेहतर आय प्राप्त हो रही है क्योंकि यह फूल बाजार में अत्यधिक मांग में है। बाजार में लिली की अधिक मांग के कारण इसकी कीमत भी अच्छी मिलती है, जो किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है। लिली के फूल अपने आकर्षक रंगों के लिए जाने जाते हैं, जिनमें लाल, पीला, गुलाबी, हल्का लाल, सफेद, और संतरी जैसे मनमोहक रंग शामिल हैं। इन फूलों का प्रमुख उपयोग गुलदस्ते बनाने में होता है, जो विशेष अवसरों और सजावट के लिए आदर्श होते हैं। लिली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कटाई के बाद भी यह अपनी ताजगी और सौंदर्य को लंबे समय तक बनाए रखता है। यह गुण इसे अन्य फूलों से अलग और अधिक लोकप्रिय बनाता है। कुल मिलाकर, लिली की खेती न केवल किसानों को अच्छी आमदनी का अवसर प्रदान करती है, बल्कि यह उनके जीवन स्तर में सुधार लाने में भी सहायक है।

लिली की विशेषताएँ

लिली के पौधे की ऊंचाई सामान्यतः 3 से 4 फुट तक होती है, जो इसे मध्यम आकार के सजावटी पौधों में सम्मिलित करती है। प्रत्येक पौधे पर लगभग 4 से 5 फूल

खिलते हैं, जो इसके आकर्षक स्वरूप को और भी बढ़ा देते हैं। यह पौधा ठंडी जलवायु में सरलता से उगाया जा सकता है, क्योंकि यह ऐसी परिस्थितियों में अपनी प्राकृतिक वृद्धि के लिए उपयुक्त है। हालांकि, इसे गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है, यदि उचित देखभाल और प्रबंधन किया जाए। गर्मी के मौसम में लिली के पौधों को तेज धूप से बचाने के लिए छायादार जाली या शेड नेट का उपयोग करना अत्यधिक लाभकारी होता है, ताकि पौधों को अत्यधिक गर्मी और सीधी धूप के प्रभाव से बचाया जा सके। इसके अतिरिक्त, पौधों को उचित दूरी पर लगाना आवश्यक है, ताकि उनकी जड़ों और पत्तियों को पर्याप्त वायु संचार और प्रकाश मिले। यह न केवल पौधों की वृद्धि को प्रोत्साहित करता है, बल्कि कीटों और रोगों के प्रकोप को भी कम करता है। इस प्रकार, उचित जलवायु प्रबंधन और पौधों के बीच सही अंतराल रखने से लिली की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि होती है।

लिली की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

लिली की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु वह होती है, जिसमें आदर्श तापमान 10 से 25 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच रहता है। इस तापमान सीमा के भीतर लिली का पौधा अच्छे से बढ़ता और विकसित होता है।

पूर्णमा सिंह सिकरवार
सहायक प्राध्यापक, (उद्यान विभाग)
(शुआदस) प्रयागराज (यू० पी०)

अत्यधिक उच्च तापमान या ठंडे वातावरण में लिली की वृद्धि प्रभावित हो सकती है, जिससे उसकी गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, लिली के पौधों को तेज धूप से बचाने के लिए 50 प्रतिशत छाया प्रदान करने वाली जाली का उपयोग करना अत्यधिक लाभकारी साबित होता है। यह जाली पौधों को सूरज की सीधी किरणों से बचाती है, जिससे पत्तियों और फूलों को जलने से बचाया जा सकता है और उनकी वृद्धि में सहायता मिलती है। इस प्रकार, उचित जलवायु और छाया का प्रबंध करके लिली की खेती को अधिक लाभकारी और सफल बनाया जा सकता है।

लिली की खेती की विधि

जमीन की तैयारी:

लिली की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन इसके लिए आदर्श मिट्टी वह है जिसका पीएच मान 6.0 से 7.0 के बीच हो। सबसे पहले, खेत की तैयारी की प्रक्रिया शुरू करते हुए, जमीन को 3 से 4 बार गहरी जुताई करके उसके ऊपरी सतह को समतल करना चाहिए। इसके बाद, अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद को मिट्टी में मिलाना चाहिए, ताकि मिट्टी की उर्वरक क्षमता बढ़े और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त हो सकें। खाद को पूरी तरह से मिट्टी में मिला देने के बाद, खेत को समतल करके 1 मीटर चौड़ी और 8 से 10 मीटर लंबी क्यारियां बनाई जाती हैं। यदि मिट्टी में कठोरता हो, तो जुताई से पहले हल्की सिंचाई की जाती है ताकि मिट्टी नरम हो सके और जुताई में आसानी हो।

लिली की किस्में

लिली के पौधों की किस्में दो प्रमुख श्रेणियों में बांटी जाती हैं:

1. **एशियाटिक लिली:** यह किस्में मुख्य रूप से एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती हैं और इनकी सुगंध और रंग की विविधता के लिए प्रसिद्ध हैं। इस श्रेणी में निम्नलिखित प्रमुख किस्में शामिल हैं:

- ✓ **कोर्डिलिया:** यह किस्म विशेष रूप से अपनी आकर्षक रंगों और मजबूत पुष्पों के लिए जानी जाती है।
- ✓ **बीट्रीक्स:** यह किस्म गुलाबी रंग के फूलों के साथ एक लहराती संरचना में खिलती है।
- ✓ **पेरिस:** एक सुंदर सफेद रंग की लिली, जो पेरिस के आकर्षण से प्रेरित है।
- ✓ **जेनेवा:** यह किस्म नीले-धूसर रंग के आकर्षक फूलों के लिए प्रसिद्ध है।
- ✓ **लंदन:** लंदन किस्म की लिली की विशेषता इसकी गुलाबी और सफेद रंग की मिलीजुली संरचना में होती है।
- ✓ **इलीट:** यह किस्म अपनी विविध रंगत और भारी फूलों के कारण लोकप्रिय है।
- ✓ **लोट्स:** लोट्स किस्म में गुलाबी और सफेद रंग के फूल होते हैं, जो इसकी सुंदरता को और बढ़ाते हैं।
- ✓ **अलास्का:** यह सफेद रंग की लिली की एक उत्कृष्ट किस्म है, जिसका आकार और सुगंध बहुत खास होती है।
- ✓ **फैस्टिवल:** इस किस्म के फूल उत्सवों में विशेष रूप से सजावट के लिए

उपयोगी होते हैं, क्योंकि इनमें रंगों की विविधता बहुत होती है।

- ✓ **मोना:** एक गहरे रंग की लिली, जो बागों और आंगनों में अपनी भव्य उपस्थिति दिखाती है।

2. **ओरिएंटल लिली:** यह लिली की एक और प्रमुख श्रेणी है, जो मुख्य रूप से ओरिएंटल देशों से उत्पन्न होती है और इसकी विशिष्टता इसमें निहित सुगंध और बड़े आकार के फूलों में है। इस श्रेणी में दो प्रमुख किस्में शामिल हैं:

- ✓ **स्टार गैजर (सफेद):** यह एक बहुत ही लोकप्रिय सफेद रंग की लिली है, जिसमें फूलों का आकार बड़ा और सुवासित होता है। इसकी सुंदरता को इसके सफेद रंग और अत्यधिक आकर्षक रूप से पहचाना जाता है।
- ✓ **स्टार गैजर (गुलाबी):** यह सफेद स्टार गैजर की तुलना में गुलाबी रंग में खिलने वाली लिली है, जो इसके आकर्षण में एक और पहलू जोड़ती है।

इसके पुष्पों में गुलाबी रंग की शेड्स होते हैं जो इसे और भी आकर्षक बनाते हैं।

पौध लगाना

लिली के पौधों को उनकी कंदों के माध्यम से लगाया जाता है, जो पौधे के वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्वों को संचित करने का कार्य करते हैं। लिली के कंदों का आकार महत्वपूर्ण होता है, और 10–12 सेंटीमीटर व्यास वाले कंदों को सर्वोत्तम माना जाता है क्योंकि ये कंद अधिक स्वस्थ होते हैं और इनमें अधिक ऊर्जा और पोषक तत्व होते हैं, जो पौधों के विकास में सहायक होते हैं। इसके विपरीत, रोगग्रस्त कंदों का उपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये कंद पौधों को संक्रमित कर सकते हैं और उनकी वृद्धि में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। कंदों को लगाने के समय का चयन भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। मैदानी क्षेत्रों में कंदों को अक्टूबर और नवंबर के महीनों में लगाया जाता है, जब तापमान ठंडा होता है और मिट्टी में नमी



अधिक होती है, जो लिली के कंदों की अच्छी वृद्धि के लिए अनुकूल है। वहीं, पहाड़ी क्षेत्रों में कंदों को अप्रैल और मई के महीनों में लगाया जाता है, क्योंकि इन महीनों में तापमान और मौसम की परिस्थितियाँ कंदों के अंकुरण के लिए उपयुक्त होती हैं।



कंद लगाने का तरीका

कंद लगाने की विधि के बारे में अधिक विस्तार से कहा जा सकता है कि सर्दी के मौसम में कंदों को 7 से 8 सेंटीमीटर गहरी खाई में बोना चाहिए, ताकि कंदों को ठंडे तापमान में सही वृद्धि और सुरक्षा मिल सके। वहीं, गर्मी के मौसम में कंदों को 8 से 10 सेंटीमीटर गहरी खाई में लगाना चाहिए, ताकि उन्हें अधिक गर्मी से बचाया जा सके और सही जल निकासी हो सके। कंदों के बीच की दूरी 15 से 20 सेंटीमीटर रखनी चाहिए, ताकि प्रत्येक कंद को पर्याप्त स्थान मिले और

उनकी वृद्धि में कोई बाधा न आए। इसके अलावा, एक लाइन से दूसरी लाइन के बीच की दूरी 25 से 30 सेंटीमीटर रखनी चाहिए, जिससे पौधों को सूर्य की रोशनी, हवा और पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा मिल सके और वे अच्छे से विकसित हो सकें।

सिंचाई

सिंचाई की प्रक्रिया में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि फसलों को मौसम के अनुसार उपयुक्त और पर्याप्त जल आपूर्ति प्रदान की जाए। सर्दी के मौसम में जल का अवशोषण कम होता है, क्योंकि तापमान में गिरावट के कारण पौधों की पानी की आवश्यकता घट जाती है। इस कारण सर्दियों में लिली जैसे पौधों को 10 से 12 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता हो सकती है। इसके विपरीत, गर्मी के मौसम में जल की आवश्यकता बढ़ जाती है, क्योंकि उच्च तापमान के कारण जल वाष्पीकरण की दर अधिक होती है और पौधों को जल की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। ऐसे में हर 5 से 6 दिनों में सिंचाई करना अनिवार्य हो जाता है। सिंचाई के दौरान यह सुनिश्चित करना भी बेहद जरूरी है कि उपयोग किया गया पानी उच्च गुणवत्ता वाला हो। इसमें किसी भी प्रकार के हानिकारक तत्व, जैसे की रासायनिक प्रदूषक, कीटनाशक, या अन्य दूषित पदार्थ नहीं होने चाहिए, क्योंकि यह पौधों के स्वास्थ्य और वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले पानी से फसल की वृद्धि सुचारु रूप से होती है और यह स्वस्थ विकास में सहायक होता है, जिससे पैदावार में वृद्धि और गुणवत्ता में सुधार होता है।

खाद और उर्वरक

लिली की खेती में खाद और उर्वरक का महत्व बहुत अधिक होता है, ताकि पौधों को उचित पोषण मिल सके और वे अच्छे से बढ़ सकें। कंद लगाने के 20 से 22 दिन बाद, प्रति एकड़ भूमि में 40 किलोग्राम सीएएन (कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट) खाद डालने की सलाह दी जाती है। यह खाद पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों, विशेषकर नाइट्रोजन, का पर्याप्त मात्रा में योगदान करती है, जिससे पौधे स्वस्थ और मजबूत बनते हैं। इसके बाद, 40 से 45 दिन बाद, पौधों को अतिरिक्त 40 किलोग्राम नाइट्रोजन उर्वरक देना चाहिए, ताकि उनकी वृद्धि में कोई रुकावट न आए और फूलों का उत्पादन बेहतर हो सके। खाद और उर्वरक डालने के बाद, यह सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है कि सिंचाई की जाए, ताकि उर्वरक की समुचित सक्रियता बनी रहे और वह मृदा में सही तरीके से अवशोषित हो सके।

सिंचाई के माध्यम से नाइट्रोजन और अन्य पोषक तत्वों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित होता है, और पौधों को आवश्यक जल आपूर्ति मिलती है, जिससे वे अच्छी तरह से विकसित होते हैं।

निराई-गुड़ाई और खरपतवार नियंत्रण

लिली की फसल में खरपतवारों की उपस्थिति को नियंत्रित करने के लिए निराई-गुड़ाई की प्रक्रिया को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। निराई-गुड़ाई करने से मिट्टी का हवादार होना सुनिश्चित होता है, जिससे जड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन मिलती है और पौधों की वृद्धि को उत्तेजना मिलती है। इसके अलावा, खरपतवारों को हटाने से लिली के

पौधों को पोषक तत्वों, पानी और सूर्य की रोशनी की पर्याप्त आपूर्ति होती है, जो उनकी समग्र विकास और फूलों की गुणवत्ता में सुधार करती है। निराई-गुड़ाई से न केवल खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण होता है, बल्कि मिट्टी की संरचना भी बेहतर होती है, जिससे पानी का अवशोषण और पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है।

सहारा देना

जब लिली के पौधे बड़े होते हैं, तो उनका तना मजबूत होकर भी भारी फूलों के कारण झुकने लगता है। इस स्थिति से पौधों को बचाने के लिए, उनके पास बांस या लकड़ी की सहारे की व्यवस्था करें। इन सहारों का इस्तेमाल करने से पौधों का तना सीधा और मजबूत बना रहता है, जिससे वे झुकने या टूटने से बच जाते हैं। बांस या लकड़ी के सहारे लिली के पौधों को स्थिरता मिलती है, और उनका विकास सुचारु रूप से होता है।

फूलों की कटाई

लिली फूलों की कटाई का सही तरीका इस प्रकार है: जब फूलों की कली खिलने लगे, तब फूलों की डंडियों की कटाई करनी चाहिए। इन डंडियों को जमीन की सतह से लगभग 6 इंच ऊपर से काटना चाहिए, ताकि फूलों की लंबाई उचित बनी रहे और पौधों के बाकी हिस्से पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। कटाई के बाद, डंडियों के निचले हिस्से की कुछ पत्तियां हटा देना आवश्यक है, ताकि फूलों की ताजगी बनी रहे और पैकिंग के समय कोई असुविधा न हो। इसके बाद, कटे हुए फूलों की डंडियों को अच्छे से पैक करके बाजार में भेजने के लिए

तैयार किया जाता है, ताकि उनका नुकसान कम हो और वे अच्छे स्थिति में ग्राहकों तक पहुंच सकें।



कंदों की खुदाई और भंडारण

लिली कंदों की खुदाई और भंडारण की प्रक्रिया में कुछ महत्वपूर्ण कदम होते हैं, जिन्हें ध्यान से किया जाना चाहिए। सबसे पहले, जब फूलों की डंडियां काटी जाएं और पौधे सूखने लगें, तो कंदों को धीरे-धीरे और सावधानी से भूमि से निकालें। कंदों की स्थिति का निरीक्षण करें और किसी भी क्षति से बचने के लिए उन्हें हाथ से निकालते समय नष्ट न होने दें। इसके बाद, कंदों को फफूंद और रोगजनकों से बचाने के लिए 26% केप्टान रसायन से उपचारित करें। यह उपचार कंदों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद करता है। इसके बाद, कंदों को शीत भंडारण में रखा जाता है। भंडारण के लिए आदर्श तापमान 2-3 डिग्री सेंटीग्रेड और आदर्श आर्द्रता 70-75% होती है। इन शर्तों में कंदों की गुणवत्ता लंबे समय तक बनी रहती है। भंडारण की अवधि में, कंदों की

स्थिति की जांच करते रहें और समय-समय पर उन्हें पलटते रहें, ताकि कोई भी कंद सड़ने या प्रभावित होने से बच सके। इस प्रकार, सही तरीके से कंदों का भंडारण उनके भविष्य में अच्छे विकास और फूलों के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

आय और वित्तीय सहायता

लिली की खेती से एक एकड़ क्षेत्र में लगभग 2 से 2.5 लाख रुपये तक की आमदनी संभव हो सकती है। यह आय विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जैसे उत्पादन की गुणवत्ता, उचित तकनीक और बाजार की स्थिति।

लिली के फूलों की खेती व्यवसाय शुरू करने के लिए आप निम्नलिखित संस्थानों से संपर्क कर सकते हैं, जो मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान कर सकते हैं:

1. राष्ट्रीय बागवानी संस्थान (National Horticultural Research and Development Foundation)

यह संस्थान बागवानी से संबंधित तकनीकी सहायता, शोध, और प्रशिक्षण प्रदान करता है। आप यहाँ लिली की खेती के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
वेबसाइट: www-nhrdf-com

2. भारतीय बागवानी संस्थान (Indian Institute of Horticultural Research)

यह संस्थान बागवानी उत्पादों के लिए अनुसंधान और विकास कार्य करता है, साथ ही विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है। वेबसाइट: www-iihr-res-in

3. कृषि और कृषि-व्यवसाय विभाग (Department of Agriculture and Cooperation)

यह सरकारी विभाग कृषि व्यवसायों के लिए योजनाएं और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। लिली की खेती के लिए भी यहां से मदद मिल सकती है। वेबसाइट: www-agricoop-nic-in

4. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)

NABARD कृषि क्षेत्र के लिए विभिन्न ऋण योजनाएं और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। आप लिली की खेती के लिए यहाँ से वित्तीय मदद प्राप्त कर सकते हैं। वेबसाइट: www-nabard-org

5. राज्य कृषि विभाग (State Agriculture Department)

राज्य कृषि विभाग में विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यक्रम और सहायता योजनाएं उपलब्ध हैं। आप अपने राज्य के कृषि विभाग से भी संपर्क कर सकते हैं।

6. कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)

यह केंद्र क्षेत्रीय स्तर पर किसानों को कृषि संबंधी प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करता है। यहाँ से आप लिली की खेती की तकनीकों और उन्नत कृषि पद्धतियों पर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

7. पुष्प विज्ञान संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली (Indian Agricultural Research Institute)

यह संस्थान फूलों की खेती पर अनुसंधान और नवाचार करता है। यहाँ से

आप लिली की उन्नत किस्मों, बेहतर उत्पादन विधियों और खेती में नवीनतम वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

8. राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड (National Horticulture Board)

यह बोर्ड बागवानी क्षेत्र में राष्ट्रीय योजनाओं और नीति निर्धारण के लिए जिम्मेदार है। वे बागवानी फसलों, जैसे कि लिली, के उत्पादन और विपणन में मदद करने के लिए योजनाओं और वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

इन संस्थानों से संपर्क करने से आपको लिली की खेती के लिए आवश्यक तकनीकी, व्यावसायिक और वित्तीय सहायता मिल सकती है।

